OM-3 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 10/04/2021 2:26 PM Page 2

परमात्म-प्रेम और पालना की कड़ी 'दादी जानकी'

ब्र.कु. गंगाधर

कहते हैं... जिसका साथी है भगवान, उसका क्या बिगाड़ेगा आंधी और तूफान। इसे बार-बार पढ़ें, उसे अपने भीतर से सुनें, तो समझ जायेंगे कि परमात्म-प्यार क्या होता है और परमात्म-पालना क्या होती है! एक है परमात्मा को जानना, दूसरा है परमात्मा को पहचानना और तीसरा है परमात्म-निर्देशन पर चलना। आत्म-अभिमानी की बात तो हमने कई बार सुनी पर परमात्म-अभिमानी होकर इस जगत में विचरण करना, ये हमने न कहीं देखा, न सुना और न ही पढ़ा। पर हाँ, ऐसा भी कहीं हुआ है, तो ये बात उस पर सटीक बैठती है जिन्होंने ऐसा जीवन जिया, वो हैं 'जनक' दादी जानकी।

जिन्होंने परमात्मा को अपना बनाया और उसके लिए प्लैटफॉर्म अपनी बुद्धि को बनाया। आत्म-भान से भी ऊपर उठकर जिन्होंने परमात्मा को ही अपना अभिमान बना लिया, वो हैं परमात्म-अभिमानी। जहाँ अपना कुछ भी नहीं, न समय, न सुविधाएं। बस परमात्मा की श्रीमत ही उनका श्वास, उनकी धड़कन और उसी के फरमान को कर-गुज़रने में ही खुश रहना उनका जीवन। इसी को ही परमात्म-अभिमानी कहते हैं। हमने देखा, दादी की लौकिक पढ़ाई भले ही कम थी पर परमात्म-ज्ञान के इतने अनुभवों की अथॉरिटी से आज के बड़े-बड़े विद्वान भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते।

दादी समय की इतनी पाबंद थीं कि जिस समय और जितना समय, जिस कार्य के लिए मुकर्रर किया, वो उसे उसी के अनुरूप ही पूर्ण करतीं। दादी ने अपना जीवन परमात्म-श्रीमत के साँचे में ढ़ालकर अपने जीवन को सबके लिए एक आदर्श बनाया। उनसे जो भी मिलता वो भी ये अनुभव करता और उनके जीवन दर्पण में अपना मुखड़ा देखकर अपने आप ही ठीक करने की प्रेरणा लेता और उसे अपने हर प्रश्न का उत्तर समाधान के रूप में मिल जाता।

दादी ने अपने हृदय को इतना विशुद्ध बनाया जो स्वयं परमात्मा को भी भाया। वे भी उनके हृदय में जैसे कि उनके साथ ही हैं, ऐसा एहसास दादी को तो था ही, लेकिन दूसरों को भी ऐसे वायब्रेशन फील होते। यज्ञ के एक-एक पाई का सदुपयोग व सफल करना सीखना हो तो दादी जानकी से सीखने को मिलता है।

दादी ज्ञान की वीणा ऐसी बजातीं जो सुनने वाले उसी के भाव में भावविभोर हो जाते। दादी का ज्ञान का स्पष्टीकरण विवेकसंगत और अकाट्य था। सहज, सरल और स्नेह, ये तीनों ही उनके जीवन से निखरता प्रतीत होता। परमात्म-प्रेम की गंगा 'दादी' के सामने कोई किसी भी भाव से आया, पर वो लौटा तो परमात्म-प्यार के अनुभव के साथ। उनपर भी परमात्म-किरणें पड़े बिना न रहीं।

दादी की परख शक्ति ज़बरदस्त थी। एक बार वे जिसे भी देख लेतीं, उसे पहचान जातीं कि ये परमात्मा का वारिस बच्चा है। और उसे परमात्म-प्यार की पालना देकर अनुभूति करातीं। दादी जितनी ही सिम्पल थीं, उतने ही उनके विचारों से वो शिखर पर थीं।

दादी को हमने नज़दीक से देखा, अंतिम श्वास तक उनका परमात्म-पढ़ाई पर अटेन्शन बना रहा। वे हमारी उन्नति के लिए इशारा भी देतीं, किन्तु स्नेह की मिश्री के साथ। दादी से मिली पालना, उनका निश्छल प्रेम हम आज भी भूल नहीं पाते।

जीवन के अंतिम पड़ाव में भी दादी का अपने भविष्य के प्रति नशा देखते ही बनता था। और जब भी कोई मिलता तो ये बात उनके मुख मंडल से निकलती... 'मैं कौन मेरा कौन, मुझे क्या करना है', ये शब्द उनके मुख से सुनने के लिए सब लालायित रहते। होते भी क्यों नहीं, क्योंकि उन्होंने जीवन जिया ही ऐसा। आज हमें सबकुछ करते हुए भी ट्रस्टीपन के भाव में रहना मुश्किल नहीं लगता, क्योंकि हमारे सामने जीता-जागता उदाहरण दादी जानकी हैं। न वे किसी से प्रभावित हुईं, न किसी को प्रभावित किया। न व्यक्ति, न वस्तु, न पदार्थ और न ही किन्हीं संसाधनों से मोहित हुईं। ऐसी स्नेहमयी, पवित्रता की मूरत, परमात्म-प्यार का अनुभव कराने वाली दादी जानकी को उनके प्रथम स्मृति दिवस पर हृदय से स्मरणांजलि।

सदा ही याद रखें ये तीन बातें

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

जीवन में तीन बातें हमेशा याद रखना, और उन्हें पक्का करना। एक, जब किसी से मिलो न, तो मुस्कुराकर मिलो। मुस्कुराना तो आता है ना! आता है? कोई को नहीं आता, तो सीखा दें? मुस्कुराने का स्टॉक तो है ना! तो आप किसी से भी मिलो, मानो क्रोधी आपके सामने आ गया तो कई भाई-बहनें हमको कहते हैं कि बहन जी क्या करूं वो क्रोधी आया ना, मैंने और कुछ नहीं किया, आधा घण्टा उसने भाषण किया खराब। मैंने तो सिर्फ एक शब्द ही बोला। तो हम उससे पूछते हैं, क्रोध आग है, ये तो आप सब जानते हो ना। जिस समय क्रोध आता है तो लाल-लाल फेस हो जाता है। गर्मी लगती है तो कहते हैं ठण्डा पानी पीलाओ, ठण्डा पानी पीलाओ। क्रोध आग है ना। तो क्रोध आग, उसमें आपने एक शब्द बोला, कौन-सी बूंद डाली आग में? पानी की या तेल की? तो तेल की डाली ना! आग में तेल की एक बूंद भी डाली तो आग बूझेगी या भड़केगी? भड़केगी ना! इसीलिए आपके सामने क्रोधी भी आवे तो आप अपना मुस्कुराना न भूलें। मुस्कुरा तो सकते हैं ना! हमने ट्रायल किया है। हम एयरपोर्ट पर जाते हैं ना, तो हमको तो पिता श्री ब्रह्मा बाबा और शिव बाबा ने सिखलाया ये है कि आप मुस्कुराते रहो, खुश रहो। इसीलिए हम एयरपोर्ट पर जाते हैं तो मुस्कुराते हैं। तो हमने देखा कि वो पहचानता भी नहीं है, लेकिन एक सेकण्ड के लिए मुस्कुराता तो देता है। ये भी तो सुख दिया ना हमने, तो आप हमेशा मुस्कुराते रहो।

दूसरी बात, कोई से भी मिलते हो तो उसे पानी या शरबत पिलायेंगे ना! ऐसे थोड़े ही बिना कुछ पिलाये छोड़ देंगे! तो आपके पास पता है एक बहुत बना बनाया एवररेडी शरबत है। मंगाना नहीं पड़ेगा, कोई दोस्त नहीं है जो ले आवे। पैसा नहीं है, ये बहाना भी नहीं चलेगा। एवररेडी शरबत है। वो शरबत है 'मीठा बोल'। है सभी के पास? वो शरबत एवररेडी है ना! तो उसको मीठे बोल का शरबत पिलाओ।

तीसरी चीज़, कोई भी आता है उसको कुछ खिलाया भी जाता है, खातिरी भी की जाती है। तो आपके पास एक बनी बनाई मिठाई है। ज़्यादा तो मिठाई से ही स्वागत करते हैं ना! तो आपके पास एक बनी बनायी मिठाई है। वो कौन सी है, दिलखुश मिठाई। है दिलखुश मिठाई आपके पास? अगर आप दिलखुश होकर उससे मिलेंगे तो वो भी दिलखुश मिठाई खायेगा। तो ये तीन चीज़ें अगर आप करो तो आपका घर भी मंदिर हो जायेगा। और घर-घर मंदिर बनने से हमारा भारत भी मंदिर बन जायेगा। जो बापू जी की इच्छा थी कि राम राज्य हो, सुख हो, शांति हो, तो जो बापू का काम अधूरा रहा वो कौन करेगा? बच्चे ही बाप का काम करते हैं ना! और बापू का भी जो 'बापू' है ना, परमात्मा राम, उसकी भी यही इच्छा है कि हमारा ये भारत जो है वो स्वर्ग बन जाये, सुखमय बन जाये, शांतिमय बन जाये। तो कौन बनायेगा, आप बनायेंगे? तो इसके लिए इन तीन चीज़ों को सदा अपने साथ रखो और उन्हें यूज़ करो, हर कार्य में, हर परिस्थिति में, हर समय उनका उपयोग करो।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जयजयकार तब होगी जब पुरानी बातें समाप्त हों

जैसे सारे विश्व में यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय अनकॉमन है क्योंकि इसको चलाने वाला चान्सलर ही अनकॉमन है। वह अलौकिक और पारलौकिक है। ऐसे अलौकिक, पारलौकिक बापदादा के हम सब स्टूडेंट्स भी अलौकिक हैं इसलिए हमारी जीवन भी अद्भुत, निराली, वन्डरफुल और प्यारी है। दुनिया में सन्यासी अनेक, योगी अनेक, विद्वान अनेक, धार्मिक नेतायें अनेक, भौतिक बातों की रिसर्च करने वाले अनेक, परन्तु विश्व का नवनिर्माण करने वाली संस्था केवल एक है। अपनी जीवन का निर्माण करने वाले हम एक हैं। आप सब यहाँ आये हो नव निर्माण करने। आपका जिस दिन ज्ञान में नया जन्म हुआ - उसको कहते हैं न्यू बर्थ डे। जब से हम शिवबाबा के इस विद्यालय में दाखिल हुए वह तारीख ही हमारे अलौकिक बर्थ डे की तारीख है। उस घड़ी से हमारा सम्बन्ध अलौकिक बन गया। वृत्ति-वायब्रेशन भी अलौकिक हो गये।

ऐसी कोई यूनिवर्सिटी नहीं जहाँ हर एक को ईश्वरीय मर्यादा के कंगन में बांधा जाए। यहाँ हमें वह कंगन बांधा गया। बापदादा का हमें यह-यह आदेश है, यह-यह नियम है। उस समय से ही हम सबने यह दृढ़ संकल्प लिया कि हमें अनेक आत्माओं का और स्वयं के जीवन का नव निर्माण करना है।

मैं जानना चाहती हूँ कि किसी की नैया बीच भंवर में रूक तो नहीं जाती? मेरी नैया की डोर खिवैया के हाथ में पक्की है? हम सब मुसाफिर हैं, नांव में बैठे हैं। हमें मजधार से पार करने वाला खिवैया है। डोरी उनके हाथ में है। वह कहता है नैया चलेगी, आंधी तूफान आयेंगे लेकिन घबराना नहीं। आंधी तूफानों से पार होने वाले का नाम है महावीर। अपना पांव नैया से मरने तक भी उतारना नहीं है। बाबा कहता ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी माना संगम पर जीवनमुक्त अर्थात् संस्कारों से मुक्त। जो अब संस्कारों से मुक्त हैं वही मुक्ति-जीवनमुक्ति पा सकते हैं। तो पहले चेक करो कि मैं सारे दिन में कितना समय मुक्त रहता हूँ? अपने संस्कारों से मेरी स्थिति मुक्त रहती है? या मैं वर्सा तो जीवनमुक्ति का ले रहा हूँ परन्तु अभी मैं संस्कारों के बन्धन में बंधा हुआ हूँ? अगर मैं संस्कारों के बन्धन में हूँ तो स्वतन्त्र नहीं परतन्त्र हूँ। यही चार्ट चेक करो - मैं लौकिक से निकल अलौकिक जीवन, अलौकिक दुनिया निर्माण करने वाला, अलौकिक संस्कार वाला ब्रह्माकुमार हूँ या शुद्र कुमार हूँ?

मुझे सदा यही फुरना(फिकर) रहता - कि मुझसे ऐसा कोई व्यवहार व बोल चाल न हो जाए जो धर्मराज के आगे झुकना पड़े। यही मुझे डर है। बाकी मैं किससे डरती नहीं, दुश्मन मेरा रावण है। बाकी सब मित्र हैं। रावण को भी प्यार से कहती - ओ रावण अब तेरा राज्य पूरा हुआ। अब तू विदाई ले। उसे भी हम डांटकर नहीं भगाते। जब हम शीतल बन जाते तो वह आपेही चला जाता है। बाबा ने हम सबको नाम दिया है - तुम हो विश्व के नव निर्माता। हम सब हैं अपनी जीवन का व विश्व का नव निर्माण करने वाले। हम विश्व के निर्माता हैं। निर्माता माना माँ बनकर, मातृ स्नेही बनकर निर्माण करना इसलिए अपना चार्ट चेक करो। अष्ट शक्तियों को रोज़ देखो और अपनी शैतानियों को समाप्त करने का संकल्प करो। जब सब पुरानी आदतें समाप्त हों तब जयजयकार होगी।

मर्यादाओं पर चलकर बनाएं पुरुषार्थ को क्वालिटी वाला

राजयोगिनी दादी जानकी जी

ईश्वर के बच्चे हैं, यह ईश्वरीय बचपन है यह कब भूलता नहीं है, उसके बच्चे हैं तो बहुत फायदा है। तो निश्चय के बल से हँसते-गाते सारा जीवन बिताया है। जो कुछ हुआ आगे नहीं होगा, सेकण्ड में फुलस्टॉप लगा दो। जो बात पूरी हुई ऑटोमेटिक आगे बढ़ो, फुलस्टॉप है तो एक छोटी-सी बिन्दी तो जो पुरुषार्थ में सब बातें याद हों, एक का दस गुणा फिर सौ गुणा, फिर हज़ार गुणा, सिर्फ बिन्दी लगानी है और आगे बढ़ना है। कोई भी लैंगवेज में ऐसे ही होगा ना ताकि कदम पर कदम रखने से, सी फादर, फॉलो फादर करने से पदमापदम भाग्यशाली बनेंगे।

कोई ने पूछा बाप समान कैसे बनें? यह लक्ष्य रखना सहज नहीं है। जिस बाप को याद करने से बल मिलता है, विकर्म विनाश होते हैं, पर बाप समान बनने का शब्द ऐसे है, भले विचार करो। बाप ऊंचे ते ऊंचा है, वो सबको बड़े प्यार से देखता है। ईश्वरीय आकर्षण से शान्ति, प्रेम, खुशी, शक्ति अन्दर में काम करती है, तो जीवन में सुख की अनुभूति ऐसी होती है जो कभी दुःख न हो।

मन शान्त, कर्मेन्द्रियाँ ऑर्डर में हैं यानी यह चाहिए, यह चाहिए से फ्री हो गई हैं, कर्मेन्द्रियों से कर्म वो करते हैं जो बाबा कराता है। श्रीमत प्रमाण चलने से इज़ी है बाप समान बनना। दिन-प्रतिदिन जो बाबा से अनुभव हो रहा है, वह अनुभव दूसरे को भी हो तो बाबा कहे मेरा बच्चा मेरे समान है। बाबा अन्दर से सन्यास कराता है, अन्दर में कोई विकार न रहे। भगवान की यूनिवर्सिटी में अच्छा पढ़ने वालों को सीट मिलती है। तो एक-दो को यह भाग्य और भगवान की पहचान देना ही सेवा है। जैसे बाबा देखते-देखते देह के बन्धनों से, दुनिया से मुक्त कराता है, यह ईश्वर की कृपा है, यह विश्वास है, दृढ़ संकल्प है तो बाप समान बन जायेंगे, बाबा छोड़ेगा नहीं। जो आपने वायदा किया है, उन वायदों को निभाना है। प्रैक्टिकली बाप समान बनने के पहले हिम्मते बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राजी...इस बात की वैल्यू है।

किसी को पुरुषार्थ का सुख, किसी को बाप की कृपा का सुख, वह दुःखहर्ता-सुखकर्ता बना देता है। जो संग में आये वह सुखी हो जाएं। अपने आपको देखो, अपने को चेक करो। ऐसा अनेक आत्माओं को अनुभव करायेंगे ना, तो बाबा कहेगा यह बच्चा तो मेरे समान है। हम नहीं कहेंगे बाप समान हूँ, बाबा कहेगा। ड्रामा है माँ, वो है बाप, हम हैं एक्टर्स, फिर वन्डर, लगाओ जीरो बनो हीरो। एक हीरो एक्टर होता है, दूसरा हीरे मिसल लाइट, बेदागी हीरा। बाबा समान बनना है तो और कोई संकल्प न आये। सिर्फ बाबा को देखते रहो ना, तो भी शरीर भूल जाता है। कोई संकल्प नहीं होता है। बाबा की जो मुरली सुनते हो उसी में खो जाना चाहिए। वन्डर है बाबा का और हर एक की सेवा का विशेष पार्ट है इसलिए किसी के लिए ऐसे शब्द कभी नहीं बोलो कि यह तो सुधरेगा नहीं, ऐसे शब्द मुख से बोलना माना बड़ी भूल करना, हमको शुभ भावना रखने में कोई खर्च नहीं है, वह काम करती है, इसमें बाबा याद आता है। मम्मा ने अपने संकल्पों की क्वालिटी बाबा समान बनाई इसलिए मम्मा प्रैक्टिकल बाप समान बनी।

कितनी भी कोई अच्छी आत्मा हो, कभी भी ईर्ष्या न आवे क्योंकि इसमें बड़ा खतरा है। कई बहनें इसके कारण घर चली गयी क्योंकि ईर्ष्या वश मम्मा को देख नहीं सकती थी। ज्ञान अमृत है, ज्ञानामृत पियेंगे, पिलायेंगे। मुझे जो भगवान बना रहा है बस मुझे वो बनना है, क्वालिटी हो पुरुषार्थ की।